ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

तिथि–10 अप्रैल 2021
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२२
युगाब्द-५१२२, अंक-१३७, वर्ष-१4
चैत्र विक्रमी २०७8 (अप्रैल 2021)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्रः 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

उद्गातेव शकुने साम गायसि ब्रह्मपुत्र इव सवनेषु शंससि। वृषेव वाजी शिशुमतीरपीत्या सर्वतो नः शकुने भद्रमा वद विश्वतो नः शकुने पुण्यमा वद ॥ –ऋ० २। ८। १२। २

व्याख्यान– हे (शकुने) सर्वशक्तिमन्नीश्वर ! आप (उद्गातेव साम गायसि) साम को सदा गाते हो, वैसे ही हमारे हृदय में सब विद्या का प्रकाशित गान करो। जैसे यज्ञ में महापण्डित सामगान करता है, वैसे आप भी हम लोगों के बीच में सामादि विद्या का गान=प्रकाश कीजिये। (ब्रह्मपुत्रइव सवनेषु) आप कृपा से सवन (पदार्थविद्याओं) की (शंससि) प्रशंसा करते हो, वैसे हमको भी यथावत् प्रशंसित करो। जैसे "ब्रह्मपुत्रइव" वेदों का वेत्ता विज्ञान से सब पदार्थों की प्रशंसा करता है, वैसे आप भी हम पर कृपा कीजिए। आप (वृषेव वाजी) सर्वशक्ति का सेचन करने, और अन्नादि पदार्थों के दाता, तथा महाबलवान् और वेगवान् होने से वाजी हो। जैसा कि वृषभ की नाईं आप उत्तम गुण और उत्तम पदार्थों की वृष्टि करनेवाले हो, वैसे हम पर उनकी वृष्टि करो। (शिशुमतीः) हम लोग आपकी कृपा से उत्तम-उत्तम शिशु (सन्तानादि) को (अपीत्य) प्राप्त होके आपको ही भजें। (आ सर्वतो नः शकुने) हे शकुने! सर्वसामर्थ्यवान् ईश्वर! सब ठिकानों से हमारे लिए (भद्रम्) कल्याण को (आ वद) अच्छे प्रकार कहो, अर्थात् कल्याण की ही आज्ञा और कथन करो। जिससे अकल्याण की बात भी कभी हम न सुनें। (विश्वतो नः शकुने) हे सबको सुख देनेवाले ईश्वर ! सब जगत् के लिए (पुण्यम्) धर्मात्मक कर्म करने को (आवद) उपदेश कर। जिस से कोई मनुष्य अधर्म करने की इच्छा भी न करे, और सब ठिकानों में सत्यधर्म की प्रवृत्ति हो ॥

सम्पादकीय

चुनावी हिंसा–स्वार्थी नेता

विश्वभर में यदि लोकतन्त्र का इतिहास निष्पक्ष होकर खोजा जाए, तो प्रायः लोग भारत में यूनानी आक्रमणकारी सिकन्दर के समय के अनेक गणराज्यों का नाम लेते हैं, जिनमें मालव गणराज्य, लिच्छिवि गणराज्य आदि का नाम प्रमुखता से उद्धृत किया जाते है, किन्तु यह सम्पूर्ण सत्य नहीं है, उससे सहस्रों वर्ष पूर्व महाभारत युद्ध से भी पहले इस राष्ट्र में चन्द्रवंशी राजा भरत ने अपने सभी पुत्रों को उपेक्षित कर प्रजा में से योग्यतम व्यक्ति चयन करवाकर राजगद्दी पर अभिषिक्त किया था, तथापि यदि इस विषय को छोड़ भी दिया जाये और सिकन्दर के समकालीन गणराज्यों को ही लोकतन्त्र–जनतन्त्र का अग्न्याधान मान लिया जाए, तब भी दुनिया से हम और हमारा लोकतन्त्र अतीव प्राचीन सिद्ध है। किन्तु वर्तमान में जिस स्वरूप में लोकतन्त्र प्रचलित है, यह स्वरूप अपनाते हुए भी हमें पचहत्तर वर्ष बीतने वाले हैं, पचहत्तर वर्ष किसी भी कालखण्ड में मानवीय सभ्यता के लिए कोई अधिक समय नहीं होता और ऐसे राष्ट्र में तो कदापि नहीं, जिस राष्ट्र में तर्क एवं युक्ति के आधार पर हम आर्यजन सृष्टि को ही लगभग दो अरब वर्ष प्राचीन मानते और सिद्ध करते हैं। किन्तु जब हम अपने करोड़ों वर्षों के अजेय–अपराजेय होने को स्वीकार करते हैं, तब ऐसी गौरवशाली परम्परा के वाहकों के लिए पचहत्तर वर्ष सीखने के लिए न्यून भी नहीं होते हैं, पुनरपि जिस कालखण्ड में सूचना प्रौद्योगिकी का वैश्विक साम्राज्य हो, युद्धों में भी बड़े–बड़े देश जनहानि की अपेक्षा मशीनी हानि सहने को प्राथमिकता देते हों, जनता को सभी से अधिक मूल्यवान मानते हों, दूसरी ओर हमारे राजनेता जनता को नैतिकता, सदाचार के लम्बे–लम्बे प्रवचन देते हों और तब भी एक प्रमुख राज्य के चुनाव में हिंसा लोगों के सिर पर सवार हो तो निश्चित ही देश के लिए लज्जा की बात है और प्रत्येक देशाभिमानी नागरिक को इस चुनावी हिंसा से शर्मिन्दा होना ही चाहिए। क्योंकि कोई भी सभ्य समाज जो आदिकाल से विचार–विनिमय, तर्क–तथ्यों पर गौरवपूर्ण रीति से चलता चला आया हो, ऐसे समाज में अपनी व्यवस्था अर्थात् सरकार के चयन करने में हिंसा का कोई भी स्थान नहीं होना चाहिए। किन्तु यह हमारे लिए दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि हमारे देश में छोटे–छोट स्थानीय पंचायतों के चुनाव से लेकर देख के लिए सर्वोच्च विधायिका–संसद के चुनावों तक में हिंसा अवश्य होती है होती ही नहीं, अपितु नेताओं द्वारा करायी जाती है। वर्तमान के विधानसभा चुनावों में भी यही देखने–सुनने एवं पढ़ने में आ रहा है। इस चुनावी हिंसा का प्रमुख कारण है-नेताओं का सत्ता लोभपूर्ण स्वार्थ। यह स्वार्थ ऐसा प्रबल है कि चाहे तो जनता के लोगों के घर सूने हो जाएं, चाहे घर उजड़ जाएं, चाहे घर के घर जल

शेष अगले पृष्ठ पर ....

पिछले पृष्ठ का शेष .... जाएं और भी, कुछ भी हो जाए किन्तु स्वार्थ पूरा होना चाहिए अर्थात् सत्ता मिलनी चाहिए। यही सत्ता स्वार्थ पश्चिम बंगाल के चुनाव में अपना नग्न नृत्य कर रहा है। एक केन्द्र सहित अनेक प्रान्तों पर शासन कर रही भाजपा माननीय प्रधानमन्त्री जी के नेतृत्व में एक और प्रान्तीय किला जीतने के लिए करो या मरो वाली स्थिति उत्पन्न कर रही है, तो दूसरी ओर पश्चिम बंगाल की माननीया मुख्यमन्त्री अपनी पार्टी के एकमात्र सरकार वाले प्रान्त को बचाए रखने के लिए इसी प्रकार अपनी सारी ताकत लगा रही हैं। दोनों ही दलों के नेता जातिवाद, गोत्रवाद, मजहबवाद का जैसा नग्ननृत्य कर रहे हैं, जैसे उत्तेजनापूर्ण भाषण दे रहे हैं, जैसा कि-दस अप्रैल के चुनावी चरण में देखने को मिला है।

अर्थात् एक पक्ष दूसरे से छीनने के लिए उतावला है तो दूसरा पक्ष बलात् अधिकार बनाए रखने के लिए लगा हुआ है। न किसी को नैतिक मूल्यों की चिन्ता है, न लोकतन्त्र की चिन्ता। नाम लोकतन्त्र का लेकिन तानशाही से भी बढ़कर व्यवहार है। न देश के प्रधानमन्त्री की मर्यादा का ध्यान, न प्रधानमन्त्री को अपने मुख्यमन्त्रियों की मर्यादा का ध्यान है। भाषा की मर्यादा कहीं रह ही नहीं गयी है। ऐसा लगता है कि ये लोग संवैधानिक उच्चपदों पर नहीं अपितु गली के नुक्कड़ पर बहस कर रहे हैं। केवल इतना ही नहीं इन सबसे ऊपर हिंसा को फैलाने में भी राजनीतिज्ञों के वक्तव्यों का ही योगदान है। यही लोगों को हिंसा के लिए उकसाते हैं, आपस में लड़ाते हैं अपने स्वार्थ के लिए सभी लोकतान्त्रिक, मानवीय, नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों को ताक पर रख दिया जाता है और रह जाता है केवल सत्ता के लिए संघर्ष। अपने व अपने समूह या कहें गिरोह, क्योंकि राजनैतिक दल भी गिरोह बन गए हैं। या तो व्यापारिक कम्पनी की तरह काम करते हैं या गिरोह की तरह। अधिकांश पार्टियों पर या तो परिवार का आधिपत्य है या फिर गिने-चुने दो-चार लोगों का आधिपत्य। जब इनमें अन्दरूनी लोकतन्त्र का ही कहीं नामोनिशान नहीं है तो फिर ये लोकतन्त्र के मूल्यों का कहाँ ध्यान रखेंगे। जब इन सबका घोषित लक्ष्य केवल सत्ता प्राप्ति ही है तो उसके लिए सत्य-असत्य, नैतिक-अनैतिक का कहाँ ध्यान रखते हैं। राजनैतिक दलों का लक्ष्य देश-सेवा नहीं अपितु सत्ता लोलुपता रह गया है।

एक और व्यवहार इनका चरित्र प्रकट करता है। इस महामारी के काल में देश में जहाँ व्यापारी, मजदूर, किसान, कर्मचारी आदि सब पर महामारी से बचाव के लिए, कुछ न कुछ नियम लागू हैं, महामारी से बचाव के लिए, वहीं इन पर अपने चुनावी प्रचार में कोई नियम लागू नहीं होता और न ही ये किसी नियम को मानते हैं यह भी इनकी संवेदनहीनता को प्रकट करता है, लोग मारे जाते रहते हैं- चुनावी हिंसा में, महामारी में, आन्दोलनों में आदि-आदि और इनका खेल चलता रहता है।

आर्यों/आर्याओं! इस मनमानी और अराजकता से बचना है तो देश की जनता को सिद्धान्तों से परीचित करवाया जाए जिससे लोग स्वार्थी लोगों के बहकावे में न आएं और अपना योगदान राष्ट्र के लिए दे सकें, न कि स्वार्थी राजनितिज्ञों के लिए अपना जीवन लुटाते रहें, मारे जाते रहें। जन-धन, राष्ट्र-धन बनकर राष्ट्र की उन्नति में सहायक हो। **-आचार्य हनुमत् प्रसाद, अध्यक्ष, आर्य महासंघ।**

वर्ण व्यवस्था: डॉ. अम्बेडकर बनाम वैदिक मत-१०

-सोनू आर्य, हरसौला

शूद्र द्विजों के घरों में भोजन, स्वच्छता, सेवा आदि कार्य करते थे तथा अन्य कार्यों में भी भागीदार रहते थे। इस प्रकार साथ रहने वाले लोग अछूत अथवा अस्पृश्य कैसे हो सकते है? वृद्ध शूद्र को सर्वप्रथम सम्मान देने का निर्देश मनु ने दिया है (2/111-112, 130)। शूद्रों को धार्मिक कार्य की स्वतन्त्रता मनु ने दी है। (10/126) दण्ड व्यवस्था में शूद्र को सबसे कम दण्ड का प्रावधान किया है। शूद्र दास, गुलाम या बन्धुआ मजदूर नहीं है। सेवकों को पूरा वेतन देने तथा अनावश्यक वेतन न काटने का निर्देश दिया है। (7/125-126, 8/216) इसी प्रकार रामायण में निषादों के राजा का वर्णन आता है जो राम का घनिष्ठ मित्र था। शबरी जो भीलनी थी, के बेर खाने का वर्णन भी रामायण में है। इसी प्रकार महाभारत आदि पर्व अध्याय 30 श्लोक-4 तथा अध्याय 31/36, 37 अध्याय 32 श्लोक-1, 2 में वर्णन आता है कि जब पाण्डव पांचालों की राजधानी काम्पिल्य में द्रोपदी स्वयंवर में भाग लेने गए, तो एक कुम्हार के घर ठहरे थे। इसी प्रकार डॉ. अम्बेडकर 'शूद्र कौन' पेज 77 पर लिखते हैं- 'राजाओं के राज्याभिषेक में शूद्र भी भाग लेते थे, ...।' नीतिमयुख के रचनाकार नीलकण्ठ ने कालांतर के एक राज्याभिषेक का वर्णन इस प्रकार किया है- 'चार प्रमुख मन्त्री, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र नये राजा का अभिषेक करते थे। प्रत्येक वर्ग के अग्रणीय जन राजा पर पवित्र जल के छींटे मारते थे।' वह पेज 54 पर कुछ मन्त्रों के बाद "उक्त मन्त्रों से स्पष्ट हो जाता है कि दास व दस्यु आर्य बन सकते थे।" वहीं पेज 57 पर ऋग्वेद के प्रमाण से 'इन उदाहरणों से यह सिद्ध होता है कि आर्य रंगभेद के पक्षधर न थे .... दशरथ पुत्र राम थे और यदु के वंशज कृष्ण को श्यामलांग बताया जाता है- महान ऋषि कण्व भी श्यामलांग ही थे।"

इसी प्रकार सत्यार्थ प्रकाश पेज 224 पर महर्षि दयानन्द निम्न जातियों के हाथ से बना खाने को कोई दोष नहीं मानते। इस प्रकार स्पष्ट है कि विशुद्ध वर्ण व्यवस्था मे शूद्रों को समान अधिकार प्राप्त थे इस व्यवस्था में शूद्रों को गुलाम, दास नहीं माना जाता था। उनके साथ कार्य, जाति अथवा रंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता था। उन्हें अस्पृश्य/अछूत नहीं माना जाता था। अत: वर्तमान में निम्न जातियों ने जो अमानवीय जीवन जीया है, वर्ण व्यवस्था में वैसी दयनीय स्थिति शूद्रों की नहीं रही।

उपसंहार- भारतीय संस्कृति में वर्ण एवं जाति व्यवस्था ऐसे प्रमुख तत्व रहे हैं जिन्होंने हमारी सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्थाओं को लम्बे समय तक प्रभावित किया है। जाति तो संभवत: वर्तमान में भी भारतीय राजनीति का सबसे ज्वलन्त मुद्दा है। वर्ण एवं जाति विषय पर दोनों विचार-सम्प्रदाय (डॉ. आम्बेडकर तथा वैदिक विचार सम्प्रदाय) यह मानकर चलते हैं कि एक समय तक वर्णव्यवस्था विशुद्ध रूप में तथा कालांतर में विकृत रूप में प्रचलित रही। विकृत वर्ण-व्यवस्था से निर्मित विकृत समाज व्यवस्था के कटु अनुभवों के कारण डॉ. आम्बेडकर ने कुछ-कुछ सहमत होते हुए भी विशुद्ध वर्ण व्यवस्था पर भी कई आपत्तियाँ उठाई किन्तु जब वैदिक मतानुयायिओं (आर्यसमाज) ने 1875 में स्थापना के उपरान्त वेदानुकूल विशुद्ध वर्ण व्यवस्था का समाज सामने रखा तो स्वयं डॉ. अम्बेडकर ने महर्षि दयानन्द द्वारा अनुमोदित वर्ण-व्यवस्था को बुद्धिगम्य एवं निरुपद्रवी कहा था। स्वयं उनके शब्दों में- 'मैं मानता हूँ कि स्वामी दयानन्द व कुछ अन्य लोगों ने वर्ण के वैदिक सिद्धान्त की जो व्याख्या की है वह बुद्धिमतापूर्ण है और घृणास्पद नहीं है ... वह केवल योग्यता को मान्यता देती है।" (जातिप्रथा उन्मुलन पृष्ठ-119)। विशुद्ध वर्ण-व्यवस्था के ही अनुकूल स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा दलितोद्धार के क्रियात्मक प्रयत्न देखकर डॉ. आम्बेडकर ने उन्हे दलितोद्धार का चैम्पियन कहा। उन्हीं के शब्दों में 'स्वामी जी दलितों के सर्वोत्तम हितकर्त्ता व हितचिन्तक थे।" अत: स्पष्ट है कि डॉ. आम्बेडकर ने निष्पक्ष रूप से यथासमय विशुद्ध वर्ण व्यवस्था की प्रसंशा एवं उसमें सहमति भी प्रकट की है और विकृत जन्माधारित वर्ण व्यवस्था की आलोचना भी की है। किन्तु डॉ. आम्बेडकर के नाम पर उनके तथाकथित आम्बेडकरवादी अनुयायी उनके सहमति पक्ष को अनदेखा कर केवल आलोचना पक्ष पर अडिग हैं, जो पूर्णत: राजनीतिक हितसाधन से अभिप्रेरित है।

नक्सलवाद : संशयात्मा विनश्यति

-आर्य सुलेख सिंह, रणभूमि कुरुक्षेत्र, हरियाणा

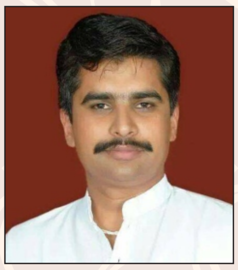

नक्सलवाद क्या? क्यों? कैसे? पर चर्चा करने का समय जा चुका है। विषय भारत की प्रत्येक समस्या के समाधान का है। नक्सलवाद साम्प्रदायिकता की भांति सबसे बड़ी आंतरिक सुरक्षा की रूकावट है। सरकारें चाहे किसी भी दल, पार्टी की क्यों न हों, पर नक्सलवाद के विरुद्ध संघर्ष में भारत अभी सक्षम दिखाई नहीं पड़ता। नक्सलवाद के समाधान के लिये दृढ़ता का अभाव स्पष्ट झलकता है। राजनेताओं का नक्सलियों के विभिन्न गुटों से जुड़ाव, फिरौती देकर काम करवाने की रूढ़िवादी परम्परा और खूनी लोगों द्वारा की जा रही हिंसा के कारणों को न जानने की भावना सारे खेल को बिगाड़ रही है।

पिछले सप्ताह लगभग दो दर्जन सुरक्षा बलों की हत्या के बाद नक्सलवाद की समस्या विचार का केन्द्र बनकर उभरी है। इससे पिछले हफ्ते भी पांच पुलिस कर्मियों को नक्सलियों ने मार डाला था। इलैक्ट्रोनिक मिडिया नक्सली समस्या को कोई महत्व नहीं देते, कई न्यूज चैनल तो नक्सलियों को भगतसिंह से जोड़कर आजादी का मसीहा तक बताते हैं। जेएनयू दिल्ली तो मानो नक्सलवादी ही है। 2010 में जेएनयू में 76 सैनिकों की हत्या पर खुलेआम जश्न मनाया जाना इसका पुख्ता प्रमाण है। कम्यूनिष्ट पार्टियाँ तो नेपाल से लेकर दुनिया के हर कोने में चल रहे सशस्त्र माओवादी द्रोहियों का समर्थन करती ही रहती हैं। मुख्यधारा की पार्टियाँ भाजपा और कांग्रेस अपने नेताओं पर नक्सली हमले के बाद भी उनका समर्थन, सहयोग करती दिखाई पड़ जाती हैं। अखबारों की कतरने झूठ नहीं बोलती कि राष्ट्रीय पार्टियों के पदाधिकारी, कार्यकर्त्ता नक्सलवादियों को हथियार, ट्रैक्टर, संसाधन मुहैया करवा रहे हैं। जहाँ तक सेनाओं का प्रश्न है आर्मी-चीफ तक नक्सलवादियों को देश के बच्चे बताकर उनके विरूद्ध सेना की टुकड़ी भेजने से इन्कार कर चुके हैं। कोर्ट आदि अर्बन नक्सलों पर राजकीय कार्यवाही को मानवाधिकारों का उल्लंघन करार करते दिखाई पड़ते हैं। चारों और लचीलापन, संशय, अस्पष्टवादिता यही कह रही है कि अभी समाधान दूर है क्योंकि माहौल यही कहता दिखता है कि सीआरपीएफ संघर्ष करो, हम पता नहीं किसके साथ हैं?

हम आर्यगण भी सम्भवत: भ्रम की स्थिति में हैं, एक ओर राजनेताओं, व्यापारियों और नक्सलवादियों का गठजोड़, दूसरी ओर इनके चंगुल में त्राहिमाम त्राहिमाम करते सुदूर बनों में तड़फते आर्यवंशी? आर्यसमाजी भी किसी न किसी पार्टी के पिछलग्गु बन उन वनवासियों की चीत्कार नहीं सुन पा रहे जिनकी सुध कभी श्रीराम ने ली थी। जो आज अपनी जमीन, जायदाद, जंगल को लुटता हुआ देख रहे हैं, सरकारों पर दबाव बनाकर कारपोरेट घराने मनचाहे कानून बनवा डालते हैं जैसे किसान आंदोलन से हाल ही में बनाये गये। तीन काले कानूनों के बारे में पता चला, पिछले 70 वर्षों में ऐसे कितने ही काले कानून बनाये गये, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, उड़ीसा से खनन तो किया गया, पर स्थानीय निवासियों को उनका हक नहीं दिया गया। खनन का लाभ टाटा, बिरला जैसे घराने ले गये और अब अदानी और अम्बानी ले रहे हैं। छ: मास से दिल्ली में बैठे किसान और सरकारों द्वारा उनकी उपेक्षा इसका स्पष्ट उदाहरण है कि हुक्मरानों के शरीर में दिल नहीं होता और यही संवेदनहीनता आक्रोश को जन्म देती है और जब अन्याय अत्यधिक बढ़ जाता है तो शोषित हथियार ले मारने लगता है, पता ही नहीं चलता अपनों को मारता है अथवा शोषणकर्ता को। यही स्थिति आज नक्सली क्षेत्रों में दिखती है। अन्तत: ध्येय से भटक कर यह व्यवसाय बन जाता है। आज नक्सलवाद एक व्यवसाय बन चुका है, जिसमें विधिवत् कर्मचारी नियुक्त किये जाते हैं, फिरौती मांगी जाती है, राजनेताओं का समर्थन किया जाता है और जिनके लिये आन्दोलन शुरु किया था, उनका भी शोषण किया जाता है, बहन-बेटी की इज्जत भी अब इज्जत नहीं रहती।

ऐसे स्थिति में आर्य शान्त कैसे रह सकते हैं? आर्यों को निशंक होकर सत्ताधारियों पर न्याय का दबाव बनाना ही होगा, खनन सम्बन्धी पारित सभी बिलों, अध्यादेशों, कानूनों का अध्ययन कर सत्य-असत्य जनता के समक्ष रखना होगा, जनता की आवाज बनकर आवश्यक बदलाव के लिये संघर्ष करना होगा। भारत के प्रत्येक नागरिक तक न्याय, अधिकार की पहुँच सुनिश्चित करवाना प्रत्येक आर्य का परम कर्त्तव्य है।

वहीं गरीब, असहाय, शोषित, पीड़ित वनवासियों के कन्धे पर बन्दूक रख अपना उल्लू सीधा करने वाले व्यवसायिक कम्यूनिस्टों, राजनेताओं, व्यापारियों को बेनकाब करना होगा। उनकी देशद्रोही, भ्रष्टाचारी, शोषक नीतियों का विश्लेषण अनिवार्य है, यह जितना शीघ्र हो उतना उचित है। कम्यूनिस्ट मिडिया द्वारा हथियार बन्द, रक्तपिपासु, नरपिशाच लोगों के प्रति बनाये गये नरम रूख को बदलना होगा। सीआरपीएफ से पूर्व सामाजिक कार्यकार्ताओं को बलिदान देना होगा जैसे सीताहरण के समय जटायु ने प्रथम बलिदान दिया था। घबराइये मत! आगे बढ़िये! यह देश हमारा अपना है, श्रीराम, श्रीकृष्ण जैसे महान आर्यवीरों ने इसे खून-पसीने से सींचा है, आर्यपुत्र बिस्मिल, भगतसिंह जैसे युवा, शोषकों, साम्राज्यवादियों से भिड़ गये, हम भी भिड़ेंगे। हाँ एकल की अपेक्षा मिलकर निर्णय करें, इससे हानि कम होती है और सफलता अधिक मिलती है। आइये जनता तक आर्य विचारधारा को पहुचावें, आर्य विचारधारा ही धर्म अर्थात् सत्य, न्याय, निष्पक्षता की प्रातिपादक होती है। आर्य विचारधारा ही नक्सलवाद का समाधान है। हमें नक्सलवादी को आर्यवादी बनाना होगा, यदि हम नहीं बना पाये तो हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश में भी किसानों के बहाने नक्सलवाद अपनी जड़ें मजबूत कर सकता है, हमें सावधान रहना होगा, आर्यत्व का प्रचार तेज करना होगा। प्रत्येक आंदोलन स्थल पर आर्यों की उपस्थिति सुनिश्चित करनी होगी, हम यह कार्य कर सकते हैं, युवाओं ने दिल्ली, पानीपत, करनाल, कैथल, रोहतक, हिसार, पंजाब में चल रहे आंदोलन में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाकर पूरे आर्यसमाज के लिये सकारात्मक संदेश दिया है। अब आर्यों को राजनैतिक बैशाखियों की आवश्यकता नहीं है। आर्य स्वयं राजनैतिक निर्णय कर सकते हैं, पूर्व में भी किये हैं, आगे भी करेंगे। आर्यावर्त्त की व्यवस्था आर्य ही कर सकते हैं। देश में न्याय, निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिये सत्यमेव जयते के उद्घोष की आवश्यकता है। यह बस आर्य संगठन के नेतृत्व में हो, आर्य संगठन को छोड़ झूठन खाने वालों से कोई अपेक्षा नहीं है। आर्य संगठन की यही आकांक्षा है कि सैनिकों की हत्या करने वालों को शीघ्रतातिशीघ्र उनके हश्र तक पहुंचाया जाये, इसके लिये आर्यगण आंदोलन कर सरकारों को विवश करें। सारा आर्यसमाज सीआरपीएफ और छतीसगढ़ पुलिस के साथ है। तीन-पाँच करने वाले नेताओं पर नजर रखी जाये, उचित समय पर उनका भी इलाज हो। हे ईश्वर! हम सब स्वदेश में निर्भय होकर न्याय प्रतिस्थापित कर सकें, हमें बुद्धि, बल, सामर्थ्य प्रदान कीजिये। अस्तु।

सहज सरल सांख्य-११

- आचार्य सतीश, दिल्ली

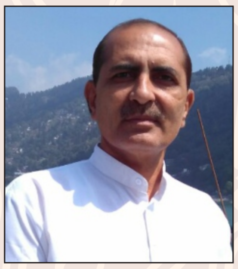

आत्मा के भोग तथा अपवर्गरूप प्रयोजन को सिद्ध करने के लिए शुभ अशुभ कर्मो के कारणों की प्रवृति होती है जो पुरुषार्थ के साधक हैं।

जैसे बछड़े के लिए गाय दूध प्रसवित करती है, इसी प्रकार सर्वनियन्ता चेतन से ही करण पुरुषार्थ के लिए प्रवृत्त रहते हैं।

तो ये करण कितने है?

ये तेरह करण हैं। मुख्य करण एक बुद्धि है, उसी का परिणाम अहंकार है। अहंकार से ग्यारह इन्द्रियाँ (एक मन, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ) परिणत हो जाती हैं। बुद्धि, अंहकार, मन तीन अन्तः करण हैं और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ ये दस बाह्यकरण कहे जाते हैं। आत्माओं के अनन्त होने के कारण और प्रत्येक आत्मा के साथ करणों का पृथक् सम्बन्ध रहने के कारण व्यक्तिगत रूप से इनको भी अनन्त कहा जा सकता है।

पुरुष के लिए सब विषयों को सीधा समर्पित करने के कारण केवल बुद्धि को करण कहना चाहिए, इन्द्रियों को करण क्यों कहा जाता है?

बुद्धि पुरुष (आत्मा) के लिए विषय को सीधा समर्पित करती है लेकिन बुद्धि का बाह्य विषय के साथ कभी सीधा सम्पर्क नहीं होता, उसके लिए इन्द्रियों का सहयोग अतिआवश्यक है। अतः आत्मा के लिए विषय को प्रस्तुत करने में दोनों की आवश्यकता है।

जैसे लकड़ी को काटने के लिए कुल्हाड़ा व तेजप्रहार दोनों होने चाहियें। आन्तर और बाह्य भेद से इन्द्रियाँ दो प्रकार की हैं मन आन्तर तथा शेष दस बाह्य हैं। जैसे लोक में किसी राज्य में अनेक भृत्य होते हैं, सब अपना-अपना कार्यकर मुख्य राज भृत्य को सौंप देते हैं, इसी प्रकार बाह्य इन्द्रियां अपने विषय मन को सौंप देती हैं अतः सब इन्द्रियों में मन प्रधान है। प्रत्येक बाह्य इन्द्रिय विषय को अपने अन्दर लेकर मन को सौंप देती है, इस नियम का कभी उल्लघंन नहीं होता है। इससे भी स्पष्ट है कि सभी इन्द्रियों में मन की प्रधानता है।

जैसे समस्त इन्द्रियों में मन प्रधान है? तो क्या समस्त करणों में भी कोई एक प्रधान है?

समस्त इन्द्रियाँ मन को, मन अहंकार को व अंहकार बुद्धि को अपना विषय सौंप देते है। बुद्धि उस विषय पर चिन्तन करती हुई उसे पुरुष को सौंप देती है, अतः बुद्धि की प्रधानता निश्चित है। सब संस्कार व धर्माधर्म का आधार होने से भी समस्त करणों में बुद्धि की प्रधानता है।

दूसरा- चिन्तनरूप वृत्ति, ध्यान व चिन्तन के द्वारा समस्त संस्कारों का आधार बुद्धि होने के कारण भी बुद्धि की प्रधानता का अनुमान होता है। वैसे भी ध्यानवृत्ति में, जो कि बुद्धिवृत्ति है, अन्य समस्त करणों की वृत्तियाँ रूद्ध हो जाती हैं।

तो क्या ये समस्त करण पुरुषार्थ की सिद्धि के लिए स्वतः प्रवृत होते हैं?

समस्त करण अचेतन प्रकृति का परिणाम होने से, उनमें किसी भी स्वतः प्रवृति की संभावना नहीं। चेतन आत्मा के भोगापवर्गरूप प्रयोजन की सिद्धि के लिए, उस चेतन आत्मा का सानिध्य ही इनकी प्रवृति का निमित्त है।

विभिन्न करणों के गुण प्रधान भाव का हेतु क्या है?

चूंकि विभिन्न करण अर्थात् इन्दियाँ भिन्न-भिन्न कार्य करती हैं। जहाँ बाह्य इन्द्रियां अपने एक नियत विषय का ग्रहण करती हैं, मन अनेक विषयों का करता है। बुद्धि वहाँ अन्तिम निर्णय करती है और आत्मा को समर्पित करती है। अतः करणों में क्रिया विशेष ही उनमें गुण प्रधान भाव का कारण है।

तो क्या समस्त करणों की प्रवृत्ति पुरुषार्थ के लिए ही होती है?

आत्मा के कर्मों से अर्जित, समस्त करणों सहित सूक्ष्म शरीर सर्गादि काल से तत्वज्ञान पर्यन्त उसके साथ बना रहता है। इस प्रकार कर्मों से अर्जित होने के कारण समस्त करणों की प्रवृत्ति उसके पुरुषार्थ अर्थात् भोगापवर्ग के लिए बनी रहती है।

जब समस्त करण समान रूप से पुरुषार्थ को सम्पन्न करने के लिए प्रवृत्त रहते हैं तो बुद्धि सबसे प्रधान क्यों?

यह ठीक है कि जिसका जो कार्य है उसको पूर्णरूप से निभाने में सबकी समानता है फिर भी कार्य विशेषता के आधार पर उनकी स्थिति में भी विशेषता आ जाती है। जैसे लोक में राजा के एक सामान्य कर्मचारी की अपेक्षा उसके मन्त्री का प्राधान्य स्वीकार किया जाता है क्योंकि उसका सीधा सम्पर्क राजा से रहता है। इसीलिये बुद्धि की पुरुष से सीधे सम्पर्क के कारण प्रधानता है। क्रमश ....

29 मार्च-27 अप्रैल 20219 चैत्र ऋतु- वसन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
हस्त कृष्ण प्रतिपदा 29 मार्च	चित्रा कृष्ण द्वितीया 30 मार्च	स्वाती कृष्ण तृतीया 31 मार्च	विशाखा/अनुराधा कृष्ण चतुर्थी 1 अप्रैल	ज्येष्ठा कृष्ण पंचमी/षष्ठी 2 अप्रैल	मूल कृष्ण सप्तमी 3 अप्रैल	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण अष्टमी 4 अप्रैल
उत्तराषाढ़ा कृष्ण नवमी 5 अप्रैल	श्रवण कृष्ण दशमी 6 अप्रैल	धनिष्ठा कृष्ण एकादशी 7 अप्रैल	शतभिषा कृष्ण द्वादशी 8 अप्रैल	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण त्रयोदशी 9 अप्रैल	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण चतुर्दशी 10 अप्रैल	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण अमावस्या 11 अप्रैल
रेवती कृष्ण अमावस्या 12 अप्रैल	अश्विनी शुक्ल प्रतिपदा 13 अप्रैल	भरणी शुक्ल द्वितीया 14 अप्रैल	कृतिका शुक्ल तृतीया 15 अप्रैल	रोहिणी शुक्ल चतुर्थी 16 अप्रैल	मृगाशिरा शुक्ल पंचमी 17 अप्रैल	आर्द्रा शुक्ल षष्ठी 18 अप्रैल
पुनर्वसु शुक्ल सप्तमी 19 अप्रैल	पुनर्वसु शुक्ल अष्टमी 20 अप्रैल	पुष्य शुक्ल नवमी 21 अप्रैल	आश्लेषा शुक्ल दशमी 22 अप्रैल	मघा शुक्ल एकादशी 23 अप्रैल	पू॰ फाल्गुनी/उ॰ फाल्गुनी शुक्ल द्वादशी 24 अप्रैल	हस्त शुक्ल त्रयोदशी 25 अप्रैल
चित्रा शुक्ल चतुर्दशी 26 अप्रैल	चित्रा शुक्ल पूर्णिमा/प्रतिपदा 27 अप्रैल		चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नवसँवत्सर प्रारम्भ आर्य समाज स्थापना दिवस 13 अप्रैल		श्रीरामचन्द्र जयन्ती चैत्र शुक्ल नवमी 21 अप्रैल	

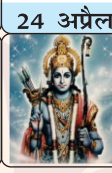

28 अप्रैल-26 मई 2021 वैशाख ऋतु- ग्रीष्म

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
		विशाखा कृष्ण द्वितीया 28 अप्रैल	अनुराधा कृष्ण तृतीया 29 अप्रैल	ज्येष्ठा कृष्ण चतुर्थी 30 अप्रैल	मूल कृष्ण पंचमी 1 मई	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण षष्ठी 2 मई
उत्तराषाढ़ा कृष्ण सप्तमी 3 मई	श्रवण कृष्ण अष्टमी 4 मई	धनिष्ठा कृष्ण नवमी 5 मई	शतभिषा कृष्ण दशमी 6 मई	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण एकादशी 7 मई	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण द्वादशी 8 मई	रेवती कृष्ण त्रयोदशी 9 मई
अश्विनी कृष्ण चतुर्दशी 10 मई	भरणी कृष्ण अमावस्या 11 मई	कृतिका शुक्ल प्रतिपदा 12 मई	रोहिणी शुक्ल द्वितीया 13 मई	मृगशिरा शुक्ल तृतीया 14 मई	मृगशिरा शुक्ल तृतीया 15 मई	आर्द्रा शुक्ल चतुर्थी 16 मई
पुनर्वसु शुक्ल पंचमी 17 मई	पुष्य शुक्ल षष्ठी 18 मई	आश्लेषा शुक्ल सप्तमी 19 मई	मघा शुक्ल अष्टमी 20 मई	पू॰ फाल्गुनी शुक्ल नवमी 21 मई	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल दशमी 22 मई	हस्त शुक्ल एकादशी/द्वादशी 23 मई
चित्रा शुक्ल त्रयोदशी 24 मई	स्वाती/विशाखा शुक्ल चतुर्दशी 25 मई	अनुराधा शुक्ल पूर्णिमा 26 मई				

गृहस्थ सम्बन्ध : भाग-२१

- आचार्य संजीव आर्य, मु०नगर

स्वतन्त्र आर्यराष्ट्र का सबसे बड़ा साधन उसका संरक्षक होता है- ब्राह्मण। तो यह सारे समाज का या राष्ट्र के सभी घटकों का कर्तव्य है कि ब्राह्मण कुलों में ब्राह्मणोचित् गुण रहें, यह सुनिश्चित करें। यह दो प्रकार से सुनिश्चित किया जा सकता है। प्रथम यह कि ब्राह्मण को ऐसी प्रतिष्ठा दें कि जिससे उसे प्राप्त प्रतिष्ठा से प्रेरणा मिले और वह ब्राह्मणोचित गुणों के धारण में उत्साही बना रहे। दूसरा यह कि उसी कुल को ब्राह्मण कुल माने जिसमें वैसे गुण होवें और जो ब्राह्मण रहते हुवे भी उक्त प्रकार के गुणधारण में प्रमाद करें उन्हें ब्रह्म पद और ब्राह्मण संज्ञा से भी अलग कर देना चाहिए। संक्षेपतः ब्राह्मण व उसके कुल में निम्न लिखित गुण होने चाहियें -

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहश्चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥ मनु.
शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्। गीता

ऋषि दयानन्द कृत अर्थः- (अध्यापनम्) 1. निष्कपट होके प्रीति से पुरुष पुरुषों को और स्त्री, स्त्रियों को पढावें। 2. पूर्ण विद्या पढ़ें। 3. अग्निहोत्रादि यज्ञ करें। 4. यज्ञ करावें। 5. विद्या अथवा स्वर्ण आदि का सुपात्रों को दान देवें। 6. न्याय से धनोपार्जन करने वाले गृहस्थों से दान लेवें भी।

इनमे से तीन कर्म- पढ़ना, यज्ञ करना, दान देना धर्म में। और तीन कर्म पढ़ाना, यज्ञ कराना, दान लेना जीविका हैं। परन्तु- **'प्रतिग्रहः प्रत्यवरः'** (मनु.)। जो दान लेना है वह नीच कर्म है किन्तु पढ़ाके और यज्ञ कराके जीविका करनी उत्तम है। साथ ही यहाँ ऋषि दयानन्द की एक विशेष टिप्पणी भी दृष्टव्य है- **''धर्म नाम न्यायाचरण। न्याय नाम पक्षपात छोड़के वर्त्तना। पक्षपात छोड़ना नाम सर्वदा अहिंसादि निर्वैरता सत्यभाषणादि में स्थिर रहकर हिंसा द्वेषादि और मिथ्या भाषाणादि से सदा पृथक् रहना। सब मनुष्यों का यही एक धर्म है।''**

(शमः) मन को अधर्म में न जाने दें, किन्तु अधर्म करने की इच्छा भी न उठने देवें। (दमः) श्रोत्रादि इन्द्रियों को अधर्माचरण से सदा दूर रखें, दूर रखके धर्म ही के बीच में प्रवृत्त रखें। तपः ब्रह्मचर्य, विद्या योगाभ्यास की सिद्धि के लिए शीत-उष्ण, निन्दा-स्तुति, क्षुधा-तृष्णा, मानापमानादि द्वन्द का सहना। (शौचम्) राग द्वेष-मोहादि से मन और आत्मा को, तथा जलादि से शरीर को सदा पवित्र रखना। (क्षान्तिः) क्षमा अर्थात् कोई निन्दा-स्तुति आदि से सतावें, तो भी उन पर कृपालु रहकर क्रोधादि का न करना। (आर्जवम्) निरभिमान रहना, दम्भ स्वात्मश्लाघा अर्थात् अपने मुख से अपनी प्रशंसा न करके, नम्र सरल शुद्ध पवित्र भाव रखना। (ज्ञानम्) सब शास्त्रों को पढ़के, विचार कर उनके शब्दार्थ-सम्बन्धों को यथावत् जानकर पढ़ाने का पूर्ण सामर्थ्य करना। (विज्ञानम्) पृथिवी से लेके परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों को जान और क्रियाकुशलता तथा योगाभ्यास से साक्षात् करके यथावत् उपकार ग्रहण करना-कराना। (आस्तिक्यम्) परमेश्वर, वेद, धर्म, परलोक, परजन्म, पूर्वजन्म, कर्मफल और मुक्ति से विमुख कभी न होना। ये नव कर्म और गुण ब्राह्मण धर्म में समझना। सब से उत्तम गुण-कर्म-स्वभाव को धारण करना। ये गुण कर्म जिन व्यक्तियों में हों, वे ब्राह्मण और ब्राह्मणी होवें। विवाह भी इन्हीं वर्ण के गुण कर्म स्वभावों को मिला ही के करें। मनुष्य मात्र में से इन्हीं को ब्राह्मण वर्ण का अधिकार होवे।

पढ़ाना, अग्निहोत्र करना और दान देना ये धर्म अर्थात् कर्तव्य हैं। पढ़ाना, अग्निहोत्र करना और सुपात्रों से दान लेना यह तीन जीविका हैं। इन सभी कर्तव्यों और जीविका दोनों की अवहेलना हुई है, जिससे सारे समाज का ढाँचा बिखर रहा है। हमारी विपुल हानि हुई है और हो रही है।

आज भी समाज का नेतृत्व तथाकथित ब्राह्मण करता है, स्त्री-पुरुष उसी से पूछकर अपने घरों के सामान्य से लेकर विशेष कार्य एवं निर्णय करता है। जैसे गांव का एक सामान्य गरीब मजदूर-किसान अपने निर्वाह के लिए बकरी वा गाय खरीदने से लेकर अपने पुत्र-पुत्री का विवाह हो, छोटे से छोटे व्यापारी को अपना व्यवसाय आरम्भ करना हो या किसी नेता को मन्त्री के रूप में शपथ ग्रहण हो प्रायः पण्डित जी से पूछकर करते हैं इसी कारण से गृहस्थ सम्बन्धों की चर्चा के बीच हम ब्राह्मण के गुण और कर्मों की चर्चा कर रहे हैं।

सभी महत्वपूर्ण अवसरों पर मार्गदर्शक के रूप में गृहस्थों के द्वारा जिसकी सहायता ली जाती है और वह वेदादि सत्य शास्त्रों के उन सर्वोच्च सिद्धान्तों को पढ़ा नहीं है अर्थात् जिसने पवित्रतापूर्वक अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया है वह कैसा मार्गदर्शन या शिक्षा देगा, यह कोई छिपी हुई बात नहीं है। राजा जिसके साथ विचार-विमर्श करता है वह उसका मंत्री कहलाता है। उसी कर्म के करने से यह समाज का उसमे सम्मिलित घर-घर का मन्त्री हुआ। गृहस्थों! जिस राजा ने अनपढ़ मन्त्री रखा हो वह तो एक बार पतन या अवनति से बच भी जाये; किन्तु जिसनें कुपढ़ मंत्री रखा हो उसे पतन से कौन बचा सकता है? अतः पढ़ना और वह भी पूर्ण विद्या को। जो पढ़ना था वह पढ़ा नहीं और जो नहीं पढ़ना था वह पढ़ा है इसी को कुपढ़ होना कहा है। नहीं तो वेद के प्रकाश में रहने वाले ऋषियों ने स्पष्ट कहा है-

योऽनधीत्यद्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥

अर्थात् जिस ब्राह्मण क्षत्रिय या वैश्य ने बिना वेद को पढे अन्यत्र परिश्रम किया वह कुपढ़ ही रहा और अधोगति को प्राप्त होगा। जो भागवतादि पुराण नाम से प्रचलित ग्रन्थ हैं वे तो ऋषि दयानन्द द्वारा घोषित कुग्रन्थ हैं ही। अतः सत्य ग्रन्थों का ही पढ़ना और निष्कपट होकर बिना भेदभाव के पढ़ाना भी। इन दो कर्तव्यों के अतिरिक्त तीसरा है दान देना व लेना अब इसकी चर्चा करते हैं-

क्रमश ....

गौकरुणानिधिः - गौ आदि पशुओं की रक्षा के लिये ऋषि का संदेश

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर गायादि पशुओं की रक्षा व उपयोगिता के लिए गौकरुणानिधि जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि ने इस पुस्तक में गायादि पशुओं के पूरे अर्थशास्त्र को, उनकी उपयोगिता को दर्शाया है तथा समीक्षा भाग में मांसाहार व मद्यपान आदि की निस्सारता व हानियों को दर्शाया है। वहीं दूसरी ओर नियमादि देकर कृषि तथा पशुओं की उन्नति का मार्ग प्रदर्शित किया है।

यहाँ प्रस्तुत है गौकरुणानिधि पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार गायादि पशुओं की रक्षा करते हैं, उनका उपयोग लेते हैं तो न केवल पूरे राष्ट्र को अपितु एक एक व्यक्ति व एक एक परिवार स्मृद्धि को प्राप्त हो सकता है। यही मार्ग हमारी आर्थिक उन्नति का मूल है तथा इसको अपनाकर हम पाप से भी बच सकते हैं।

गतांक से आगे ...

४४-इस सभा की अन्तरङ्गसभा को [न केवल] उचित है, किन्तु अत्यावश्यक है कि उक्त प्रकार से अप्राप्त पशुओं की प्राप्ति, प्राप्तों की रक्षा, रक्षितों की वृद्धि और बढ़े हुए पशुओं से नियमानुसार और सृष्टिक्रमानुकूल उपकार लेना। अपने अधिकार में सदा रखना, अन्य किसी को इसमें स्वाधीनता कभी न देवे।

४५-जो कि यह बहुत उपकारी कार्य है, इसलिए इसका करनेवाला इस लोक और परलोक में स्वर्ग, अर्थात् पूर्ण सुखों को अवश्य प्राप्त होता है।

४६-कोई भी मनुष्य इस सभा के पूर्वोक्त उद्देशयों के लिये बिना सुखों की सिद्धि नहीं कर सकता।

४७-क्या ऐसा कोई भी मनुष्य सृष्टि में होगा कि जो अपने सुख-दुःखवत् दूसरे प्राणियों का सुख-दुःख अपने आत्मा में न समझता हो।

४८-ये नियम और उपनियम उचित समय पर वा प्रतिवर्ष में यथोचित विज्ञापन देने पर शोधे वा घटाये-बढ़ाये जा सकते हैं।

ओ३म् सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।

तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥ ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

धेनुः परा दयापूर्वा यस्यानन्दाद्विराजते ।
आख्यायां निर्मितस्तेन ग्रन्थो गोकरुणानिधिः॥१॥
मुनिरामाङ्कचन्द्रेऽब्दे तपस्यस्यासिते दले ।
दशम्यां गुरुवारेऽलङ्कृतोऽयं कामधेनुपः ॥२॥

॥ इति गोकरुणानिधिः॥

प्रभु नाम सुमर ...

-आर्य आनन्द स्वरूप, मु०नगर

हर पल अच्छे कर्मों को कर, हर प्रातः सुमर हर शाम सुमर।
प्रभु नाम सुमर प्रभु नाम सुमर, सदा नाम सुमर सदा नाम सुमर॥
हर पल हर पल हर छिन हर छिन, प्रभु नाम सुमर प्रभु नाम सुमर॥
जो अभी नहीं तो कभी नहीं, अन्तिम हो जाने कौन घड़ी।
चेतन होकर जड़ बना हुआ, नहीं देख रहा सिर मौत खड़ी।
तूने खो डाली यूँ हीं उमर, प्रभु नाम सुमर प्रभु नाम सुमर॥
जीवन कैसा अनमोल मिला, कभी मूल्य नहीं समझा इसका।
खोता जा रहा व्यर्थ साँसे, पड़ रहा इन्द्रियों का चस्का।
फिर मिले कभी क्या ये तन नर, प्रभु नाम सुमर प्रभु नाम सुमर॥
प्रभु देख रहा तेरी करनी, तू उसको क्या बहकायेगा।
जब समय जायेगा निकल मूढ़, रोयेगा और पछतायेगा।
फिर कहाँ रहेगी तेरी खबर, प्रभु नाम सुमर प्रभु नाम सुमर॥
हर पल अच्छे कर्मों को कर, हर प्रातः सुमर हर शाम सुमर।
प्रभु नाम सुमर प्रभु नाम सुमर, प्रभु नाम सुमर प्रभु नाम सुमर॥

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट-

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अतः आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अतः पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक

www.aryanirmatrisabha.com/
हिन्दी में पत्रिका
पर जाएं।

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

सत्र करके अच्छा महसूस किया। पहले से ही आर्य सिद्धान्तों से परिचित था। परन्तु समझाने का तरीका संवाद शैली नयी थी, वह अच्छी लगी। मेरी इच्छा और आशा है कि इसी तरह आर्य निर्माण का कार्य चलता रहा तो एक दिन यह देश आर्यावर्त अवश्य बनेगा। इस तरह आर्य शिविरों का आयोजन होना चाहिए। भविष्य में और अधिक युवाओं को आर्य बनाया जाना चाहिए।

मैं सभी आर्यों और आचार्यों को बहुत-बहुत धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

नाम : अक्षय मुनि, आयु : 53 वर्ष, योग्यता : 8, कार्य : वानप्रस्थी, पता : अवधपुरी कॉलोनी, पुष्पांजली रोड़ मथुरा।

वैदिक संस्कृति से थोड़ा बहुत जुड़ाव बचपन से रहा है। परन्तु इस सत्र को करने के बाद आर्य, आर्य संस्कृति व वेदों के बारे में बहुत कुछ पता चला। देश के वर्तमान हालात का स्पष्ट विवरण मिला। इस देश में हो रहे तुष्टीकरण की राजनीति से जो देश का नुकसान हो रहा है उसे खत्म करने का रोड़मैप आर्यसमाज के पास है। बस जरूरत है उस पर चलने की।

इस सत्र में व्यक्ति निर्माण के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चा हुई। मैं इस बात से पूर्ण सहमत हूँ कि व्यक्ति निर्माण से ही राष्ट्र निर्माण सम्भव है।

मैं अभी प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी कर रहा हूँ। इसके साथ-साथ मैं वैदिक संस्कृति के प्रचार के लिए काम करना चाहूँगा व यथासम्भव सामाजिक व आर्थिक सहयोग करना चाहूँगा।

नाम : नवदीप, आयु : 25 वर्ष, योग्यता : बी.टेक, कार्य : अध्यापक, पता : वजीराबाद, दिल्ली ।

सभी सत्र अच्छे रहे। जाति, धर्म, पंथ, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर हम सब मिलकर आर्य बनकर आर्यावर्त की ओर चल पडेंगे तो निश्चित ही भारत आर्यावर्त्त हो जायेगा। आज की परिस्थिति में इस प्रकार की शिक्षा भारत के हर कोने में होना जरूरी है। हर जिला, तालुका, स्थान पर सत्र लिये जायें तभी जाकर कुछ परिणाम मिल सकता है।

भारत की शिक्षा के बदलाव में सहभागी हों। शिक्षा ही मुख्य विषय है। आर्य बनने के लिए शिक्षा आवश्यक है। वेदों के बारे में शिक्षा होनी चाहिये। शिक्षा स्थानों की संख्या तेजी से बढ़नी चाहिये। वेदों का वेदाध्ययन सही हो इसक लिये कार्य हो, स्पष्टता हो। दो दिन का प्रशिक्षण/शिक्षा भारत के हर प्रदेश में होता रहे; यह अपेक्षा मैं व्यक्त करता हूँ। हमारा और कम्युनिष्टों का विषय भिन्न होते हुए भी आचार्य अग्निवेश जी के कारण राजनीति में कार्य करते समय हमारा आर्य जरा बदनाम हुआ है। इस तरफ हमें ध्यान देने की आवश्यकता है। राजनीति में स्पष्टता होनी चाहिये।

भविष्य में समय देने की कोशिश करूंगा। मुझे स्वयं अधिक शिक्षा ग्रहण करने की आवश्यकता है।

नाम : अरविंद कडबे, आयु : 58 वर्ष, कार्य : सेवानिवृत्त, पता : सवारकर नगर, नागपुर।

हमे अनुभव हुआ कि मैं एक सच्चा इंसान, मनुष्य अब पूरा बन गया हूँ। हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है? हमें इस धरती एवं राष्ट्र के लिए क्या कार्य करना चाहिये? देश के लिए जीना है और उसके लिए ही मरना है। असल में हमारी धरती, देश हमारा है, हम आर्यावत्त में रहने वाले थे हमें आर्य बनकर देश की व्यवस्था परिवर्तन करना है और सभी लोगों जो अपने को हिन्दू कहते हैं उन्हें यही बताना है कि हमें असल में आर्य होना होगा क्योंकि हम ईश्वर की संतान हैं। हमारा एक धर्म, एक ईश्वर, एक भाषा होनी चाहिए। आज दो दिन के सत्र से मुझे आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई। ईश्वर एक है, धर्म एक है, वह वैदिक अर्थात् वेदों के अनुसार सत्य सही धर्म है। मुझे पुरुषार्थ करके पूरे देश को आर्य को बनाना है, जो भूल गये हैं कि मैं कौन हूँ? इस देश में उनको बताना है कि हम आर्य हैं। यह आर्यों की धरती है। वेदों के अनुसार हमें- 1. जुआ नहीं खेलना चाहिए। 2. मूर्ति-पूजा नही करनी चाहिए। 3. धर्म के लिए लड़ना चाहिए।

भटके हुए आर्यावर्त्त में जो आर्य से हिन्दू बने हैं, उन्हें ज्ञान देकर आर्य बनाना है। और देश को आर्यावर्त्त की ओर लेकर जाना है। वेद ज्ञान के अनुसार चलना ही ठीक-ठीक जानकर सही धर्म को बताना है आर्यों का कार्य समझाना है देश को आजाद कराना है।

नाम : राजेश तिवारी, आयु : 47 वर्ष, योग्यता : स्नातक, कार्य : सांगठिनक कार्य, पता : मैरोपुर, औरंगाबाद।

सत्र का अनुभव बहुत अच्छा रहा। बहुत कुछ नयी बातों व नये दृष्टिकोण को जानने का मौका मिला। ये सत्र राष्ट्र निर्माण के लिए अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि लोगों के बीच में बहुत सारी भ्रान्तियाँ विद्यमान हैं। एकता में ही शक्ति है व सबको ही एक करना लक्ष्य मात्र है। सत्र में बहुत सारे विकारों को दूर करना भी लक्ष्य रहा जो कि पूर्ण भी हुआ। कुछ बातों में संशय सत्र के पहले दिन रहा लेकिन दूसरे दिन वो भी दूर हो गया। सत्र में कार्यकारी सत्रार्थियों का व्यवहार उल्लेखनीय है।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा में हमारा सहयोग लोगों को शिक्षित करना व उन्हें (सत्र) दिलवाना हमारा उद्देश्य होगा।

नाम : गौरव सोनी, आयु : 24 वर्ष, योग्यता : स्नातक, कार्य : नौकरी, पता : अलवर, भरतपुर, राजस्थान।

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	11,12 अप्रैल	दिन-रवि, सोम	मास-चैत्र	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-उ.भाद्र,रेवती
पूर्णिमा	27 अप्रैल	दिन-मंगलवार	मास-चैत्र	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-चित्रा
अमावस्या	11 मई	दिन-मंगलवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-भरणी

संध्या काल

चैत्र-मास, वसन्त-ऋतु, कलि-5122, वि. 2078
(29 मार्च 2021 से 27 अप्रैल 2021)

प्रातः कालः 5 बजकर 45 मिनट से **(5.45 A.M.)**
सांय कालः 6 बजकर 30 मिनट से **(6.30 P.M.)**

वैशाख-मास, ग्रीष्म-ऋतु, कलि-5122, वि. 2078
(28 अप्रैल 2021 से 26 मई 2021)

प्रातः कालः 5 बजकर 30 मिनट से **(5.30 A.M.)**
सांय कालः 7 बजकर 00 मिनट से **(7.00 P.M.)**

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमतप्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।